लेखक परिचय

शिवपूजन सहाय

शिवपूजन सहाय का जन्म सन् 1893 में गाँव उनवाँस, ज़िला भोजपुर (बिहार) में हुआ। उनके बचपन का नाम भोलानाथ था। दसवीं की परीक्षा पास करने के बाद उन्होंने बनारस की अदालत में नकलनवीस की नौकरी की। बाद में वे हिंदी के अध्यापक बन गए। असहयोग आंदोलन के प्रभाव से उन्होंने सरकारी नौकरी से त्यागपत्र दे दिया। शिवपूजन सहाय अपने समय के लेखकों में बहुत लोकप्रिय और सम्मानित व्यक्ति थे। उन्होंने **जागरण**, **हिमालय**, **माधुरी**, **बालक** आदि कई प्रतिष्ठित पत्रिकाओं का संपादन किया। इसके साथ ही वे हिंदी की प्रतिष्ठित पत्रिका **मतवाला** के संपादक-मंडल में थे। सन् 1963 में उनका देहांत हो गया।

वे मुख्यत: गद्य के लेखक थे। **देहाती दुनिया**, **ग्राम सुधार**, **वे दिन वे लोग**, **स्मृतिशेष** आदि उनकी दर्जन भर गद्य-कृतियाँ प्रकाशित हुई हैं। **शिवपूजन रचनावली** के चार खंडों में उनकी संपूर्ण रचनाएँ प्रकाशित हैं। उनकी रचनाओं में लोकजीवन और लोकसंस्कृति के प्रसंग सहज ही मिल जाते हैं।

कमलेश्वर

कमलेश्वर का जन्म सन् 1932 में मैनपुरी (उत्तर प्रदेश) में हुआ। इलाहाबाद विश्वविद्यालय से उन्होंने एम.ए. किया। दूरदर्शन के अतिरिक्त महानिदेशक के पद पर कार्य करने वाले कमलेश्वर ने कई पत्र-पत्रिकाओं का संपादन भी किया जिनमें **सारिका**, **दैनिक जागरण** और **दैनिक भास्कर** प्रमुख हैं। *साहित्य अकादेमी* पुरस्कार से पुरस्कृत कमलेश्वर को भारत सरकार ने *पद्म भूषण* से भी सम्मानित किया। 27 जनवरी 2007 को दिल का दौरा पड़ने से उनका निधन हो गया।

नयी कहानी आंदोलन के अगुआ रहे कमलेश्वर की प्रमुख रचनाएँ हैं–**राजा निरबंसियाँ**, **खोई हुई दिशाएँ**, **सोलह छतों वाला घर**, **जिंदा मुर्दे** (कहानी-संग्रह) **वही बात, आगामी अतीत**, **डाक बंगला**, **काली आँधी** और **कितने पाकिस्तान** (उपन्यास)। उन्होंने आत्मकथा, यात्रा-वृत्तांत और संस्मरण भी लिखे हैं। कमलेश्वर ने अनेक हिंदी फिल्मों एवं टी.वी. धारावाहिकों की पटकथाएँ भी लिखी हैं।

कमलेश्वर की रचनाओं में तेज़ी से बदलते समाज का बहुत ही मार्मिक और संवेदनशील चित्रण है। आज की महानगरीय सभ्यता में मनुष्य के अकेले हो जाने की व्यथा को उन्होंने बखूबी समझा और व्यक्त किया है।

मधु कांकरिया

मधु कांकरिया का जन्म सन् 1957 में कोलकाता में हुआ। उन्होंने कोलकाता विश्वविद्यालय से अर्थशास्त्र में एम.ए. किया, साथ ही कंप्यूटर एप्लीकेशन में डिप्लोमा भी।

उनकी प्रमुख रचनाएँ हैं–**पत्ताखोर** (उपन्यास), **सलाम आखिरी, खुले गगन के लाल सितारे, बीतते हुए, अंत में ईशु** (कहानी-संग्रह)। उन्होंने कई सुंदर यात्रा-वृत्तांत भी लिखे हैं। मधु कांकरिया की रचनाओं में विचार और संवेदना की नवीनता मिलती है। समाज में व्याप्त अनेक ज्वलंत समस्याएँ जैसे–अप संस्कृति, महानगर की घुटन और असुरक्षा के बीच युवाओं में बढ़ती नशे की आदत, लालबत्ती इलाकों की पीड़ा आदि उनकी रचनाओं के विषय रहे हैं।

शिवप्रसाद मिश्र 'रुद्र'

शिवप्रसाद मिश्र 'रुद्र' का जन्म सन् 1911 में काशी में हुआ। उनकी शिक्षा काशी के हरिश्चंद्र कॉलेज, क्वींस कॉलेज एवं काशी हिंदू विश्वविद्यालय से हुई। रुद्र जी ने स्कूल एवं विश्वविद्यालय में अध्यापन कार्य किया और कई पत्रिकाओं का संपादन भी किया। बहुभाषाविद् रुद्र जी एक साथ ही उपन्यासकार, नाटककार, गीतकार, व्यंग्यकार, पत्रकार और चित्रकार थे।

उनकी प्रमुख रचनाएँ हैं–**बहती गंगा, सुचिताच** (उपन्यास), **ताल तलैया, गज़लिका, परीक्षा पचीसी** (गीत एवं व्यंग्य गीत संग्रह)। उनकी अनेक संपादित रचनाएँ काशी नागरी प्रचारिणी सभा द्वारा प्रकाशित हुई हैं। वे सभा के प्रधानमंत्री पद पर भी रहे। सन् 1970 में उनका देहांत हो गया।

रुद्र जी अपनी जन्मभूमि काशी के प्रति आजीवन निष्ठावान रहे और उनकी यही निष्ठा उनके साहित्य में व्यक्त हुई है, विशेषकर उनकी अनुपम कृति **बहती गंगा** में। **बहती गंगा** को कुछ विद्वान उपन्यास मानते हैं तो कुछ उसे कहानी-संग्रह भी मानते हैं।

अज्ञेय

सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यायन 'अज्ञेय' का जन्म सन् 1911 में उ.प्र. के देवरिया जिले के कसिया (कुशीनगर) इलाके में हुआ। प्रारंभिक शिक्षा जम्मू-कश्मीर में हुई और बी.एस.सी. लाहौर से की। क्रांतिकारी आंदोलन में भाग लेने के कारण अज्ञेय को जेल भी जाना पड़ा।

साहित्य एवं पत्रकारिता को पूर्णतः समर्पित अज्ञेय ने देश-विदेश की अनेक यात्राएँ कीं। उन्होंने कई नौकरियाँ कीं और छोड़ीं। आज़ादी के बाद की हिंदी कविता पर अज्ञेय का व्यापक प्रभाव है। कविता के अलावा उन्होंने कहानी, उपन्यास, यात्रा-वृत्तांत, निबंध, आलोचना आदि अनेक विधाओं में भी लेखन किया है।

उनकी प्रमुख रचनाएँ हैं–**भग्नदूत**, **चिंता**, **अरी ओ करुणा प्रभामय**, **इंद्रधनु रौंदे हुए ये, आँगन के पार द्वार** (काव्य-संग्रह), **शेखर : एक जीवनी**, **नदी के द्वीप** (उपन्यास), **विपथगा**, **शरणार्थी, जयदोल** (कहानी-संग्रह), **त्रिशंकु**, **आत्मनेपद** (निबंध), **अरे यायावर रहेगा याद** (यात्रा-वृत्तांत)। अज्ञेय द्वारा संपादित **तार सप्तक** सहित चार सप्तकों का समकालीन हिंदी कविता के इतिहास में महत्त्वपूर्ण स्थान है। *साहित्य अकादेमी* एवं *ज्ञानपीठ* पुरस्कार सहित अज्ञेय को अनेक राष्ट्रीय-अंतर्राष्ट्रीय पुरस्कारों से भी पुरस्कृत किया गया। सन् 1987 में उनका देहावसान हो गया।

बौद्धिकता की छाप अज्ञेय के संपूर्ण लेखन में मिलती है। उनके लेखन के मूल में वैयक्तिकता की पहचान की समस्या है।